28 जनवरी, 2019 को कुंभ मेला, इलाहाबाद में आयोजित ऐतिहासिक Summit of Grace (शक्ति कुंभ) and Kumbh Mela के Grand Procession' के उद्घाटन के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण ।

1. गंगा, यमुना, सरस्वती यानी त्रिवेणी के संगम पर उपस्थित महिलाओं एवं बालिकाओं एव भद्रजनों के इस अपार जनसमूह को संबोधित करते हुए मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है। Global Interfaith Wash Alliance एवं परमार्थ निकेतन के गंगा एक्शन परिवार द्वारा संगम के तट पर आयोजित किया जा रहा यह सम्मेलन वास्तव में बहुत ही सामयिक एवं प्रासंगिक है। बढ़ती हुई आबादी, घटते जल स्रोत, गंगा की सफाई का संकल्प, जलवायु परिवर्तन का कुप्रभाव, स्वच्छता अभियान, समाज के निर्माण में महिलाओं और बालिकाओं का योगदान एवं सतत् एवं सम्पूर्ण विकास के लिए भविष्य में उन्हें कुशल नेतृत्व संभालने के लिए किस प्रकार तैयार किया जाए, इत्यादि विषयों पर सार्थक विचार–विमर्श होगा।

2. मै सौभाग्यशाली हूं कि मुझे आध्यात्मिकता के अद्भुत तरंगों से सराबोर होने का सुअवसर मिला है। अनायास ही मन में एक असीम शांति एवं अनंत ऊर्जा का अनुभव मैं कर पा रही हूं। यह प्रयाग तट है जहां त्रिदेव किसी न किसी रूप में अवश्य आते हैं इस अवधि में।

3. कुम्भ की बात करते ही पहला विचार वहां आने वाले साधु–संतों के बारे में आता है। सन्त शब्द अत्यन्त श्रद्धा से युक्त शब्द है। मैं कहना चाहूंगी कि सन्त यानि 'स' का अन्त, यानि स्व–अहंकार से मुक्त व्यक्ति ही सन्त है, जिसका जीवन जनकल्याण व उत्थान के लिए समर्पित हो। वे केवल स्व–मोक्ष तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि वे सब इस जीवन की सत्यता को समझते हुए एक आदर्श जीवन जीने की कला को जन–जन तक पहुंचाने का पुण्य कार्य कर रहे हैं। तभी तो हम सब उन्हें श्रद्धा से सन्त कहते हैं।

4. सन्त जन अपने ज्ञान से देश, काल और परिस्थिति का सटीक आकलन कर पाते हैं। वे निराकार भाव से समाज को भविष्य के लिए मार्गदर्शन देते हैं एवं अपनी संस्कृति को सहेजकर रखने की प्रेरणा देते हैं ताकि बदलते वक्त में जीवन जीने की कला इनके सान्निध्य में मिलती रहे।

5. इस पवित्र समागम के अवसर पर हम सबको यह विचार करना है कि समाज को और सशक्त, सुरक्षित, समृद्ध और संस्कृत कैसे बनाया जाए। कैसे उन संसाधनों को सुरक्षित रखा जाए जो हमें प्रकृति ने प्रदान किए हैं। वह कौन–सी शक्ति है जो सृष्टि का निर्माण करती है। मेरी दृष्टि में वह आद्य शक्ति है, नारी शक्ति है जो सम्पूर्ण सृजन के पीछे है। यह ऐतिहासिक शक्ति कुम्भ सम्पूर्ण नारी शक्ति जगत को समर्पित है।

6. **हमारी संस्कृति में सदैव महिलाओं को सर्वोच्च माना गया है। वे सृष्टि का आधार हैं। वे सर्वशक्तिमान हैं, उनके पराक्रम, शौर्य, कीर्ति, तेजस्विता, साहस एवं क्षमा जैसे गुणों की तुलना नहीं की जा सकती। स्वयं श्रीमद्भागवत में श्रीकृष्ण कहते हैं:–**

"मृत्यु: सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् ।
कीर्ति: श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृति: क्षमा ।।"

(श्लोक नं. 10.34 – सबका हरण करने वाली मृत्यु और उत्पन्न होनेवालों का उद्भव मैं हूँ तथा स्त्री जाति में कीर्ति, श्री, वाक्, स्मृति, मेधा, धृति और क्षमा मैं हूँ।)

7. महिलाएं जीवन की त्रिविध शक्तियों–ज्ञान, समृद्धि और शक्ति की प्रतिरूप हैं जो क्रमशः तीन देवियों सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा के पास विद्यमान है। हमारे इतिहास में कई प्रख्यात महिलाओं की जीवन गाथाएं दर्ज हैं जिन्होंने अनुकरणीय साहस का परिचय दिया था और उदात्त आदर्शों की स्थापना की थी। गार्गी, मैत्रेयी, लीलावती, पद्मिनी, जीजाबाई, अहिल्याबाई आदि कुछ ऐसे नाम हैं जिन्होंने हमारी सभ्यता और राष्ट्र के इतिहास को नया आयाम और नई दिशा प्रदान की है।

8. पूरी दुनिया में महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन का वाहक माना जाता रहा है। **जैसा कि इस प्रसिद्ध लोकोक्ति में कहा गया है, जब हम एक महिला को शिक्षित करते हैं, तो हम पूरे समाज को शिक्षित करते हैं।** महिलाएं घर में और

समाज में मार्गदर्शक की भूमिका निभाती हैं तथा उनमें अपने धैर्य, धीरज और परिश्रम से परिवार और समाज के अन्य सदस्यों को प्रेरित करने, उनको सन्मार्ग पर लाने और उनमें सुधार करने की सहज क्षमता होती है।

9. इस बात के महत्व को समझते हुए कि यदि महिलाओं को समाज में समान दर्जा नहीं दिया जाता है तो समाज की प्रगति नहीं हो सकती है, हमारे संविधान में महिलाओं और पुरुषों को समान दर्जा दिया गया है। हमारी शासन प्रणाली में किसी भी प्रकार के लैंगिक भेदभाव को एक अपराध माना गया है। इसके बावजूद, वास्तविक जीवन में महिलाओं को हो रही कठिनाइयों तथा उनके सामने आ रही चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, हम जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं की प्रगति और कल्याण सुनिश्चित करने के लिए समुचित कानून बनाकर और कार्यपालिका द्वारा की जाने वाली अनेकों पहलों के द्वारा लैंगिक भेदभाव को समाप्त करने का लगातार प्रयास कर रहे हैं।

10. स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में, महिलाएं धीरे–धीरे ही सही हमारी प्रतिनिधि संस्थाओं सहित प्रशासन और अन्य निर्णयकारी निकायों में महत्वपूर्ण पदों पर निश्चित रूप से आई हैं। यह जानकर बहुत प्रसन्नता होती है कि हमारी लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के सबसे निचले स्तर पंचायती राज संस्थाओं में दस लाख से अधिक महिलाएं निर्वाचित हुई हैं, जो जन कल्याण की नीतियाँ बनाने, उनकी आयोजना और कार्यान्वयन में सक्रिय और निकट रूप से जुड़ी हुई हैं।

11. वर्तमान समय में महिलाएं जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रही हैं। भारत में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां पर महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं कराई है। हमें इस बात पर गर्व है कि हाल ही में हमारी वायु सेना ने महिला लड़ाकू पायलटों की भर्ती की है। यह वास्तव में हमारे जैसे देश के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है क्योंकि यहां महिलाओं को अभी भी कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। परंतु समय बदल रहा है और पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारत में महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार हुआ है। यह बदलाव शहरी क्षेत्रों में अधिक दिखाई देता है लेकिन ग्रामीण भारत भी इस मामले में पीछे नहीं है। मुझे पूरा विश्वास है कि **स्टार्ट अप और स्किल इंडिया** जैसी पहलें ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने में सहायक सिद्ध होंगे। ''**बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ**'' कार्यक्रम से बालिका शिशु का बेहतर भविष्य सुनिश्चित होगा। सभी क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता में बड़े पैमाने पर बढ़ोतरी हुई है और उनके द्वारा किया जाने वाला आर्थिक योगदान भी उल्लेखनीय है। परंतु अभी भी बहुत कुछ हासिल किया जाना बाकी है। हम राष्ट्र के समक्ष आ रही चुनौतियों का डटकर सामना करते रहेंगे और इसके विकास में अपना योगदान देंगे। इसी उद्देश्य से हमने वर्ष 2016 में देश में पहली बार नई दिल्ली में महिला जनप्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन किया था और इस सम्मेलन की थीम थी–''**सशक्त महिला जनप्रतिनिधिः सशक्त भारत की निर्माता।**''

12. जब हम आज गंगा की, प्रमुख नदियों की पूजा करते हैं तो क्यों करते हैं, इसके रहस्य को हम समझें। जिन प्रमुख नदियों को पूजा जाता है उनमें यमुना, पौराणिक सरस्वती, ब्रह्मपुत्र, महानदी, नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी और पेरियार शामिल हैं जो कि हमारे राष्ट्रीय जीवन की कुछेक प्रमुख नदी जल प्रणालियां हैं। इनमें से प्रत्येक नदी का अपना एक अलग स्वरूप है जिसे हमारे शास्त्रों और कला की विभिन्न विधाओं जैसे नृत्य, नाटक और कविताओं में दर्शाया गया है।

13. पावन नदी गंगा पवित्रता की द्योतक है और यह मोक्ष प्रदान करने वाली है। यमुना नदी, जिसके तट पर पवित्र नगर मथुरा बसा हुआ है, जो कि भगवान श्री कृष्ण की जन्मभूमि है, श्रृंगार की प्रतीक है। अदृश्य नदी सरस्वती को ज्ञान, विद्या की नदी कहा जाता है तथा जो सृष्टि के निर्माता, भगवान ब्रह्मा से भी जुड़ी हुई है। नर्मदा को कुमारी नदी के रूप में वर्णित किया गया है जो कि वैराग्य भाव से जुड़ी हुई है। गोदावरी को भक्ति से जोड़कर देखा जाता है और ऐसा माना जाता है कि राम, सीता और लक्ष्मण ने अपने वनवास का अधिकांश समय इसी पावन नदी के तटों पर बिताया था। इसी प्रकार कावेरी को संस्कृति और कृष्णा को शौर्य के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। कावेरी के तट पर विकसित हुए संगीत को कर्नाटक संगीत के नाम से जाना जाता है। ये सभी नदियां हमारे लिए आजीविका, समृद्धि और अध्यात्म का स्रोत रही हैं। **हम शक्ति कुंभ का आयोजन कर रहे हैं, तो इसके**

लिए पवित्र संगम से अधिक उपयुक्त स्थान दूसरा कौन हो सकता है, जहां पर तीनों नदियों गंगा, यमुना और सरस्वती एक ही स्थान पर मिलती हैं।

14. हम जानते हैं कि नदी जीवनदायिनी है, प्रकृति जीवनदायिनी हैं, पेड़–पौधे, वट–वृक्ष सभी आदर के पात्र हैं क्योंकि वे हमें तीनों तापों से मुक्ति दिलाने में समर्थ हैं। सत्, रज और तम ये त्रिगुण हैं जो सम्पूर्ण सृष्टि को संचालित करते हैं। हमारे धर्मग्रन्थ, हमारी जीवन–पद्धति, हमारा सब कुछ पर्यावरण व सृष्टि को सहेजने के लिए है। इसीलिए तुलसी, नीम, वटवृक्ष, पीपल की हर घर में पूजा होती है।

15. वैसे तो वे चारों स्थान, जहां कुम्भ का आयोजन होता है, वे अपने–आप में विशेष हैं, परंतु मैं यहां यह भी कहना चाहूंगी कि किसी भी स्थान पर आध्यात्मिक समागम हो और चारों दिशाओं से एकत्रित होकर साधु–संत आपस में विचार–विमर्श करें तो निश्चय ही वहां के वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। इस सकारात्मक ऊर्जा एवं जीवन्त माहौल से प्रेरित होकर ही श्रद्धालुजन ऐसे समागमों में स्वतः ही खिंचे चले आते हैं तो कुछ भक्तियोगी पुण्य प्राप्ति एवं ज्ञान प्राप्ति की लालसा में आते हैं।

16. मान्यता के अनुसार, यहां सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने सृष्टि कार्य पूर्ण होने के बाद प्रथम यज्ञ किया था। इसी प्रथम यज्ञ के 'प्र' और 'याग' अर्थात यज्ञ से मिलकर प्रयाग बना और इस स्थान का नाम प्रयाग पड़ा। यहां भगवान श्री विष्णु के बारह स्वरूप विद्यमान हैं, जिन्हें द्वादश माधव कहा जाता है। इसे तीर्थ

राज भी कहा जाता है। यानी सभी तीर्थ यहीं से निकले हैं। तीर्थ शब्द का अर्थ है 'तरन्ति अननेति तीर्थम्' अर्थात् जिससे जनसमुदाय पार उतरता है, वह तीर्थ है।

17. शास्त्रों में वर्णित है किः

सहस्त्रं कार्तिके स्नानं, माघे स्नानं शतानि च।

वैशाखे नर्मदा कोटिः, कुम्भस्नानेन तत्फलम् ॥

अर्थात् सैकड़ों स्नान कार्तिक मास में किए हों, हज़ारों स्नान माघ मास में तथा करोड़ों बार वैशाख में नर्मदा स्नान करने से जो पुण्य अथवा फल प्राप्त होता है, वही पुण्य एक बार कुम्भ स्नान पर्व में स्नान करने से प्राप्त हो जाता है। यह है इस कुम्भ का विशेष महत्व। **कुम्भ आस्था, धर्म एवं अध्यात्म का अद्भुत संगम है।**

18. मैं इस अवसर पर स्वामी चिदानंद सरस्वती के कुशल नेतृत्व में जीवन के सभी क्षेत्रों से आने वाले गंगा एक्शन परिवार के स्वयंसेवकों एवं अन्य सहयोगियों द्वारा किए गए इस उदात्त कार्य की प्रशंसा करती हूं। अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए ये स्वयंसेवक गंगा और इसकी सहायक नदियों के संरक्षण और नदी की सांस्कृतिक विरासत को बचाने के साथ–साथ कई राज्यों में इन नदियों पर आश्रित लोगों की आजीविका की रक्षा के लिए मिशन मोड में कार्य कर रहे हैं।

19. इन्हीं शब्दों के साथ मैं प्रयागराज की इस पापनाशिनी एवं मोक्षदायिनी पुण्यभूमि को प्रणाम करती हूं। आप सभी यहां कुम्भ समागम में पधारे, इसके लिए आप सभी का धन्यवाद। जब आप यहां से वापस अपने घर जाएंगे तो अध्यात्म,

आस्था, विश्वास, सौहार्द और संस्कृतियों के मिलन की अनूठी स्मृतियां साथ ले जाएंगे।

जय हिन्द।

———